Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052 (UIF)
Volume-3 | Issue-12 | June-2014 Available online at www.aygrt.isrj.net

सूफीयों में संगीत की महत्ता :- एक अध्य्यन

Tajinder Singh

Asst.Prof

सारांश -सूफी संतो, फ़कीरों व् दरवेशों ने सूफी काव्य को संगीतबद्ध कर ना केवल इस्लाम के प्रचार का साधन बनाया अपितु ईश्वर से मिलाप का एक सरल माध्यम भी माना |

"**Sufis had accepted MUSIC as a means of attaining union with God**" [1]

अर्थात सूफीयों ने संगीत को प्रमात्मा से मिलाप का एक माध्यम माना है |

प्रस्तावना-

आचार्य ब्रहस्पति जी लिखतें है " शब्दों से चिपके रहने वाले मौलवी गाना , बजाना , नाचना , सर्वदा वर्जित समझते है , वहां ईश्वर के ध्यान में आत्म विस्मृत हो कर गाना , बजा|ना ,नाचना , शेख जुनैन बगदादी (मृत्यु 911 ई.) शेख अबु बकर शिबली (मृत्यु 946 ई.) जैसे सूफीयों की दृष्टि में वैध ही नहीं अपितु आवश्यक भी है | "[2] शेख़ निज़ाम- उद - दीन ओलिया ने कहा है कि " जदो मैनु क़यामत वेले सदा आवे तां ओ वी राग दी धुन विच होवे तां चंगा है |"[3]

सूफीयों दवारा संगीत को दिए प्रेम का सब से बड़ा सूचक उनकी अपनी रचनाओ में कई सांगीतिक शब्दों का प्रयोग है , जैसे :-

अली हैदर यार बजाने वाला, ताल भी तूं ते तान भी तूं	(अली हैदर)
बँसी काहन अचरज बजाई	(बाबा बुल्लेह शाह)
अनहद बाजा बजे शहाना, मुरतिभ सुघरा तान तराना	(बाबा बुल्लेह शाह)
*वाहे वंजली प्रेम दी घत्त जाली.	(वारिस शाह)

इस प्रकार सूफीयों ने अपनी विचारधारा का प्रचार संगीत के माध्यम से किया इस बात का एक और ठोस प्रमाण मौलाना रूमी की 'मसनवी' से प्राप्त होता हैं जिसमें मौलाना रूमी बांसुरी का प्रमाण देते हुए अपना आध्यात्मिक विचार देते हुए कहते हैं

" बिशानो अज़ ना चुन हिकायत मीं कुंद,
न अज़ जुदाईहा सहित मीं कुंद " [4]

अर्थात बांसुरी को सुनो , इसकि आवाज बहुत ही करुणामय निकलती हैं इसका कारन यह हैं की यह अपने मूल से जुदाई की शिकायत करती है |

उपरोक्त मिसरे से यह बात पूर्ण रूप से सपष्ट हो जाती है के सूफी संतो ने अपने विचारों को कितनी खूबसूरती से संगीत के माध्यम से संगीत के माध्यम से व्यक्त किया |

सूफी फकीरो द्वारा अपने सिद्धांतो व् विचारों का प्रचार - प्रसार किया व् इसको अल्लाह पाक के इलाही ज्ञान को जानने व् ह्रदये में बसा कर इस में ही लीन हो जाने का माध्यम मानते हुए अपनी खानगाहों च मज़ारों में " महफ़िल - ए - सामाअ " की परम्परा को विकसित किया .. ' सामाअ ' अभी भाषा का शब्द है , जिसका अर्थ है :- ' सुणन डा कर्ज ' , ' राग जां संगीत सुनना' [5]

“ Sama was not an ordinary worship , but had a extraordinary ‘Power’ which could take sufies away into the spiritual realm ”[6]

अर्थात सामाअ एक साधारण पूजा नहीं बल्कि इसमें एक असाधारण शक्ति थी जो सूफ़ीयों आध्यात्मिक क्षेत्र में दूर तक ले जाती थी..

“ The Sama, signifies circular dance and qawwali (congregational singing) which is performed with a view to induce a state of ectasy in sufies.”[7]

अर्थात ' सामाअ ' परिपत्र नृत्य व् क़व्वाली (समूह गायन) का प्रतीक है .. जो सूफ़ीयों में परमानंद (अल्लाह पाक) की सत्ता को प्रेरित करने के लिए प्रदर्शित किया जाता था |

“ **Sheikh Nizam - ud – din auliya grades ‘ SAMA ’ into four categories – Halal (lawful), Haram (unlawful), Mabah (permissible), Makrooh (detestable**),”[8]

अर्थात ' सामाअ ' हलाल (धार अनुसार) , हराम (धर्म विरुद्ध) , मोबाह (अनुमति योग्य) , मकरू (घृणा योग्य) भी हो सकता है .. इस लिए सामाअ में पर्तेक किस्म के संगीत को ना-मंजूरी दी गई.. और सामाअ की कुछ एक शर्तें राखी गई || सूफ़ीयों ने सामाअ में केवल वही संगीत सुनने को उचित समझा जो इन चार नियमों का अनुसरण करे :-

यह चार नियम इस प्रकार है **..**

“1 . मसमिअ
2 . मुसमूअ
3 . मुसतिमिअ
4 . आलाति सामाअ
1 . मसमिअ :- गाउँन वाले नु कहंदे हन जो कि बलग होणा चाहिदा है ना कि लड़का जां औरत
2 . मुसमूअ :- जो कुंज ओह गावे ग ओह फुहरा (अश्लील) ते फज़ूल नहीं होणा चाहिदा
3 . मुसतिमिअ :- ओह जो सुनने : सुणन वाला व् याद - हक़ (रब दी याद) नाल पुर होवे ते उस वेले बातिल - ख्याल (अस्ति दे विचार) अधीन न होवे ..
4 . आलाति सामाअ :- सामाअ दे आलात चंग रबाब आदि हन यह मजलिस (संगत) विच्च नहीं होणे चाहिदे " [9]

क़ाज़ी सलल्लाहु पानीपती (मृत्यु 1810 ईस्वी) ने संगीत सुनाने कि पक्ष में कुछ 'हदीसें' (हज़रात मुहम्द साहिब की प्रमाणिक उक्तियाँ) अपनी पुस्तक 'रिसाल : सामाअ व् मज़ामीर' में उद्धृत कीं हैं , जिसके अनुसार गाने कि विषय में निम्नलिखित शर्तें रखीं गई हैं|

"1 **.** विषय :- गाने का विषय ऐसा होना चाहिए , जिस में न कोई इस्लाम विरोधी बात हो और न ही किसी जीवित नारी के सौंदर्य की चर्चा हो |

2 . गायक :- गायक संगीत जीवी न हो और सचित्र हो |

3 . श्रोता :- श्रोता इन्द्रजई हो और वासना से वशीभूत ना हो |

4 .समय :- नमाज़ के समय के अतिरिक्त अन्य किसी भी समय गण सुना जा सकता है |

5 . स्थान :- गोष्ठी का आयोजन मकान में होना चाहिए जो ऐकान्त में होना चाहिए |

6 . गोष्ठी मैं उपस्थित जनसमूह :- गोष्ठी में उपस्थित प्रतेक वयक्ति सचित्र और समानशील हो |

7 .वाद्य :- सुषिर वाद मज़ामीर कहलाते है , बांसुरी , नफ़ीरी और शहनाई जैसे वाद्य 'मज़ामीर ' है | हाथ या लकड़ी के आघात से बजने वाले डफ़ , ढोल , नक्कार जैसे वाद्य मुआज़िफ कहलाते हैं |"[10]

इस प्रकार हमें इस नतीजे पर पहुंचते है कि सूफी संगीत बहुत बंधनो में बंधा हुआ है |जो इस पवित्रता को कायम रखने कि लिए सूफी संतो द्वारा बनाये गए |अपनी इस पवित्रता कि कारण ही सूफी संगीत शुरुआत से लेकर अब तक प्रतेक वयक्ति कि जीवन में चाहे वह किसी भी धर्म से सम्बन्ध रखता हो , एक अलग व् पाक असतित्व रखता है| i

1. Contribution of saints and seers to the music of india, Shantsheela sathinathan, p-98
2. मुस्लमान और भारतीय संगीत ,आचार्य ब्रहस्पति, p-27
3. हुसैन रचनावली, प्यारा सिंह पदम, p-29
4. अनुवाद, फ़ारसी अनुवाद विशेषांक, अप्रैल-सितम्बर 2010, P-19
5. पंजाबी सूफी - सहित संदर्भ ग्रन्थ, (संपादक) गुरदेव सिंह, p-77
6. Gisudiraz:on Sufism, Syed shah khusro hussaini,p-135
7. Indian music and assessment, John ishrat, p-104
8. वहीँ
9. पंजाबी सूफी - सहित संदर्भ ग्रन्थ, (संपादक) गुरदेव सिंह, p-77
10. मुस्लमान और भारतीय संगीत ,आचार्य ब्रहस्पति, p-33-34

Tajinder Singh
Asst.Prof